राष्ट्र जागरण का शंखनाद

शाश्वत हिन्दू गर्जना

वर्ष : 31 माह : मार्च 2024 सहयोग : ₹ 10

नारी शक्ति सम्मेलन संपन्न

भारतीय संस्कृति की नींव है भारत की नारी शक्ति

भारतीय संस्कृति की नींव है भारत की नारी शक्ति

देश के विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत की महिलाएं जिन्हें भारतीय संस्कृति में अति उत्तम स्थान प्राप्त है वह परिवार को, समाज को, देश को सुसंस्करित बनाने में, परंपराओं के संवर्धन- संरक्षण और हस्तांतरण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। एक मां के रूप में, एक पत्नी के रूप में, एक बहन के रूप में, एक बेटी के रूप में वह अपनी विभिन्न भूमिकाओं को निभाते हुए राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में और भी मजबूती के साथ अपनी भूमिका तय कर सकती है।

महिलाएं सामाजिक विकास में, सांस्कृतिक विकास में, राजनीतिक विकास में, सुरक्षा में,सामाजिक समरसता में कुछ छोटी परन्तु महत्वपूर्ण बातो का समावेश कर अपना योगदान दे सकती हैं। आज आवश्यकता इसी बात कि है कि महिलाएं अपनी भूमिका के प्रति चौतन्य हो। क्योंकि भारतीय संस्कृति के निव में ही भारत की नारी शक्ति विद्यमान है।

महिलाएं सामाजिक विकास में, सांस्कृतिक विकास में, राजनीतिक विकास में, सुरक्षा में, सामाजिक समरसता में कुछ छोटी परन्तु महत्वपूर्ण बातो का समावेश कर अपना योगदान दे सकती हैं।

देश व समाज में महिलाओं की सहभागिता बढ़े और महिला विषयक चिंतन समाज तक पहुंचे, इस उद्देश्य के साथ महाकौशल प्रान्त में **"नारी शक्ति सम्मेलन"** का आयोजन वृहद स्तर पर किया गया। सम्मेलन में भारतीय चिंतन में महिलाएं, राष्ट्र के विकास में महिलाओं की भूमिका विषय पर केंद्रित सत्रों में आमंत्रित वक्ताओं ने अपने विचार रखे। इसी के साथ एक सत्र चर्चा सत्र भी था जिसमें महिलाओं की वर्तमान स्थिति और उनके सामाजिक जीवन की समस्याएं, स्थानीय समस्याएं व उनका समाधान आदि विषयों पर चर्चा में मातृशक्तियो ने बढ़ चढ़कर अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

महाकौशल प्रांत के 24 जिलों में सम्पन्न इस नारी शक्ति सम्मेलन में समाज के विभिन्न वर्गों यथा कला, साहित्य, प्रशासन, चिकित्सा, समाज सेवा, क्रीड़ा, धार्मिक संस्थान, स्वयंसेवी संस्थान, राजनीति आदि से नेतृत्व करने वाली लगभग 30,000 मातृशक्तियों ने अपनी सहभागिता निभाई। इस सम्मेलन में उपस्थित मातृशक्तियों ने संकल्प के साथ विभिन्न सत्रों में हुई बातों को अपने जीवन मे उतारने की बात कही। उन्होंने संकल्प लिया कि वे भविष्य के भारत के विकास हेतु मजबूती के साथ, कदम से कदम मिलाकर अपनी भूमिका का निर्वहन करेंगी।

- प्रो. मनीषा शर्मा

शाश्वत हिन्दू गर्जना

(मासिक)

महाकौशल प्रांत
वर्ष 31 अंक - 3
मार्च 2024
विक्रमाब्द् - 2080
युगाब्द - 5125

संपादक
डॉ. किशन कछवाहा

सह-संपादक
डॉ. नुपूर निखिल देशकर

कार्यकारी-संपादक
कृष्ण मुरारी त्रिपाठी 'अटल'

सलाहकार संपादक
डॉ. यतीश जैन
चंद्रशेखर पचौरी

प्रकाशक
नरेन्द्र जैन
विश्व संवाद केन्द्र
महाकौशल न्यास, जबलपुर

सम्पर्क
प्लॉट नं.1, म.नं. 1692
नव आदर्श कॉलोनी,
गढ़ा मार्ग, जबलपुर
फोन-0761-4006608

मुद्रक
ग्रेनेडियर्स प्रिंटिंग प्रेस
जबलपुर
फोन : 0761-2620184

संपादकीय...

भारत की नारी शक्ति

महिलाएँ भारत के संपूर्ण विकास की मुख्य धुरी हैं। आज विश्व भारत की ओर देख रहा है और भारत अपने देश की मात्र शक्तियों की ओर विश्व का शायद ही ऐसा कोई राष्ट्र होगा जहां भारत की भांति महिला संबंधित प्रतीक दिए गए हों जैसे राष्ट्र को भारत माता नदियों को गंगा मैया गौ माता तुलसी मैया इससे यही अर्थ निकलता है कि आदिकाल से आधुनिक कल तक भारत में स्त्रियों का स्थान कभी भी नागण्य नहीं रहा। नारी की प्रत्येक रूपों में हमने वंदना ही की है। आज भी भारत की विकास यात्रा में महिलाओं का अतुलनीय योगदान है। संविधान के निर्माण में जहाँ 15 महिलाओं का योगदान था, वहीं चंद्रयान की सफलता में 54 महिला वैज्ञानिकों का योगदान रहा, यह अविस्मरणीय है। भारत की स्वतंत्रता से लेकर आज तक भारत का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जो महिलाओं से अछूता है। हमें गर्व की अनुभूति होती है जब हम कहते हैं, कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र वाले राष्ट्र का प्रथम व्यक्ति अर्थात राष्ट्रपति महामहिम द्रोपदी मुर्मू जनजाति समाज की बेटी है।

भारत के 75 वें गणतंत्र दिवस पर कर्त्तव्य पथ की परेड में भी महिला सशक्तिकरण का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। सेना की परेड से लेकर 9 झांकियों तक महिला सशक्तिकरण की झलक दिखलाई देती है। यह प्रथम अवसर था जब सभी महिलाओं की त्रि-सेवा टुकड़ी ने परेड में प्रदर्शन किया। विश्व ने देखा कि किस तरह 15 महिला पायलटों को भारतीय वायु सेवा के फ्लाईपास्ट का हिस्सा बनाया गया।

केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल की टुकड़ी में भी इस वर्ष मात्र महिला कर्मियों को ही सम्मिलित किया गया। लेफ्टिनेंट दीप्ति राणा और प्रियंका सेवदा ने कर्तव्य पथ पर परेड में स्वाति हथियार का पता लगाने वाले राडार और पिनाका रॉकेट सिस्टम का नेतृत्व किया। 100 से अधिक महिला कलाकारों ने पारंपरिक सैन्य वाद्ययंत्रों के स्थान पर शंखनाद, नगाड़ा के साथ भारतीय वाद्य यंत्रों को बजाया। आज की महिलाओं को सैद्धांतिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षा पर भी ध्यान दिया जा रहा है। इसमें व्यापारिक शिक्षा के अंतर्गत महिलाओं को कौशल विकास के लिए, महिला स्वावलंबन एवं रोजगार हेतु प्रशिक्षण के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

वैश्विक विकास अध्ययन केंद्र ने पाया कि भारत की आज महिलाएँ राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में लगभग 80 प्रतिशत योगदान दे रही हैं। सूक्ष्म एवं लघु उद्योग के माध्यम से लाभ अर्जित करने वाली महिलाओं ने मुद्रा योजना का लाभ लिया और ऐसी लाभार्थी 70 प्रतिशत हैं। इन करोड़ों महिलाओं ने अपने छोटे-छोटे व्यावसायिक प्रतिष्ठानों से दूसरों को भी रोजगार दिया है। भारत में महिलाओं के पास 12 मिलियन से अधिक सूक्ष्म, लघु और मध्यमय, उद्यम इकाइयों का स्वामित्व और उनको चलाने का अनुमान हैं।

इन सब बातों से यह स्पष्ट होता है कि आज के भारत में महिलाएँ केवल शिक्षित ही नहीं सशक्त है और अपने संस्कारों के साथ, अपने पारंपरिक परिधानों में भारत के विकास का नया युग प्रारंभ करने चल पड़ी है।

❑❑❑

जबलपुर की पेंटिंग को एशिया बुक ऑफ रिकॉर्डस में मिली जगह

जबलपुर में लता मंगेशकर की बनी इस पेंटिंग को मिल चुकी है एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में जगह, देखें तस्वीरें स्वर कोकिला भारत रत्न लता मंगेशकर के पूरी दुनिया में लाखों-करोड़ों फैंस हैं। लेकिन जबलपुर में लता मंगेशकर का एक अनोखा फैन है, जिसकी बनाई पेंटिंग की तारीफ खुद स्वर कोकिला लता दीदी ने की थी। जबलपुर के कलाकार ने अपनी कला के जरिए लता मंगेशकर की एक ऐसी पेंटिंग बनाई जिसकी वजह से उसका नाम एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज हुआ था। इस एक पेंटिंग में लता दीदी की 1436 तस्वीरें है, जिसे बनाया है जबलपुर के कलाकार रामकृपाल नामदेव ने पेंटर रामकृपाल द्वारा बनाई गई लता मंगेशकर कि यह पेंटिंग इसलिए खास है क्योंकि यह लता मंगेशकर के जीवन से जुड़ी कई घटनाओं को भी प्रदर्शित करती है। स्वर कोकिला की इस तस्वीर के अंदर 1436 ऐसी छोटी-छोटी तस्वीरें हैं, जो लता मंगेशकर के जीवन से जुड़ी हुई घटनाओं से प्रेरित हैं।

लता मंगेशकर की पूरी उम्र के कई चेहरे इस पेंटिंग में साफ नज़र आते हैं। गौर से देखने पर इस तस्वीर में कई छोटी-छोटी तस्वीरें नजर आती है। जिनकी कुल संख्या 1436 है। इसमें लता मंगेशकर से मुलाकात करने वाले और संगीत की दुनिया से जुड़े कई महान कलाकारों के चित्र लता मंगेशकर के साथ बड़ी ही बारीकी से उकेरे गए हैं। इस तस्वीर में रामकृपाल को करीब 11 महीने का वक्त लगा और इस दौरान उन्होंने तस्वीर को बनाने में बहुत सी बारीक चीजों का भी ध्यान रखा है। इसके साथ भी उन्होंने लता दीदी के कई चित्र बनाएं है।

रामकृपाल नामदेव बताते है कि उनकी 11 महीनों की मेहनत तब रंग लाई जब उनका नाम इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड और एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज हो गया। रामकृपाल इसके पहले भी लता मंगेशकर की अनोखी तस्वीर बनाने के मामले में लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज करवा चुके थे। रामकृपाल बताते हैं कि वह लता मंगेशकर के बचपन से ही बड़े फैन रहे हैं। इसलिए अपनी कला में हमेशा लता मंगेशकर को शामिल करते रहे हैं। इसी का नतीजा है कि उन्हें लता मंगेशकर से मुलाकात करने का भी मौका मिल गया था। रामकृपाल कहते हैं कि हाल ही में जब उनकी तबीयत खराब होने की खबर लगी तो वह काफी परेशान हो गए और तब से वह ईश्वर से यही प्रार्थना कर रहे थे कि लता मंगेशकर जल्द से जल्द ठीक हो जाएं लेकिन दुर्भाग्य से ईश्वर ने उसकी प्रार्थना नहीं सुनी। रामकृपाल का कहना है कि अब वह गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड की भी तैयारी कर रहे हैं।

❑❑❑

महत्त्वपूर्ण दिवस माह मार्च

- 4 मार्च - रामकृष्ण जयंती
- 4 मार्च - राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस
- 5 मार्च - स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती
- 8 मार्च - अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस
- 9 मार्च - संत तुलाराम जयंती
- 10 मार्च - सावित्री बाई फुले पुण्यतिथि
- 11 मार्च - छत्रपति संभाजीराजे भोसले पुण्यतिथि
- 20 मार्च - विश्व वन दिवस
- 22 मार्च - संत तुकाराम जयंती
- 23 मार्च - शहीदी दिवस, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु
- 23 मार्च - झूलेलाल जयंती
- 25 मार्च - चौतन्य महाप्रभु जयंती
- 25 मार्च - गणेश शंकर विद्यार्थी पुण्यतिथि
- 25 मार्च - होली पर्व
- 27 मार्च - संत तुलाराम जयंती
- 30 मार्च - संत सुन्दरदास जयंती

आबू धाबी में श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण मंदिर

आबू धाबी में बना हिंदू मंदिर जिसमें गंगा और यमुना का पवित्र जल, राजस्थान का गुलाबी बलुआ पत्थर, भारत से पत्थरों को लाने में प्रयोग की गई लकड़ी के बक्सों से बना उपस्कर। इस मंदिर की वास्तुकला भी चमत्कारिक है जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों के योगदान है। प्रधानमंत्री मोदी ने बुधवार 14 फरवरी 2024 को इस मंदिर का उद्घाटन किया। मंदिर के दोनों ओर गंगा और यमुना का पवित्र जल बह रहा है जिसे बड़े-बड़े कंटेनर में भारत से लाया गया है। जब पर्यटक अंदर आएंगे तो उन्हें जल की दो धाराएँ दिखेंगी जो सांकेतिक रूप से भारत में गंगा और यमुना नदियों को दर्शाती हैं। 'त्रिवेणी' संगम बनाने के लिए मंदिर की संरचना से रोशनी की किरण आएगी जो सरस्वती नदी को दर्शाएगी।

मंदिर के प्रमुख स्वयंसेवी अधिकारी विशाल पटेल के अनुसार जिस ओर से गंगा का जल बहता है वहाँ पर एक घाट के आकार का एम्फीथिएटर बनाया गया है। 'इसके पीछे इसे वाराणसी के घाट की तरह दिखाने का भाव है। जहाँ लोग बैठ सकें, ध्यान लगा सकें और उनके मन में भारत में बने घाटों का अनुभव आए। 25000 से ज्यादा पत्थरों से बना दुबई-अबू धाबी शेख जायेद हाइवे पर अल रहबा के समीप स्थित बोचासनवासी श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बीएपीएस) द्वारा निर्मित हिंदू मंदिर करीब 27 एकड़ जमीन पर बनाया गया है। इसकी ऊंचाई 108 फीट होती है। 4 लाख घंटे से अधिक श्रम के साथ इसे बनाया गया है।

यह मंदिर पश्चिम एशिया का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर है। वैदिक वास्तुकला और मूर्तियों से प्रेरणा लेते हुए मंदिर का डिजाइन परंपरा और विरासत के प्रति गहरी श्रद्धा को दिखाता है। भारत में कारीगरों ने सावधानीपूर्वक जटिल नक्काशी की और मूर्तियां बनाई।मंदिर के निर्माण के लिए 700 से अधिक कंटेनर में दो लाख घन फुट से अधिक 'पवित्र' पत्थर लाया गया है। मंदिर की नींव में 100 सेंसर और पूरे क्षेत्र में 350 से ज्यादा सेंसर हैं, जो तापमान, भूकंप और दबाव से जुड़े डेटा देते हैं।

'मंदिर से जुड़ी मुख्य बात'

- गुजरात में शताब्दियों पूर्व हिंदू से अर्धमुस्लिम फिर पूर्ण मुस्लिम बनाने वाला एक पंथ था जिसे पीराना (इस्माईली) कहते हैं।
- देश के बंटवारे में इस पंथ का सबसे बड़ा हाथ है। मोहम्मद अली जिन्ना इसी मत को मानने वाला शिया मुस्लिम था। इसके पूर्वज पीराना सूफियों के प्रभाव में आकर सर्वप्रथम अर्धमुस्लिम बनें थें फिर भविष्य में जिन्ना पूर्ण मुस्लिम बनकर निकला।
- स्वामीनारायण अर्थात् नीलकंठवर्णी अर्थात् सहजानंद का जब गुजरात में आगमन हुआ था, तब बड़ी संख्या इसी पंथ को मानने वाली थी। नीलकंठवर्णी के कारण यही लोग बाद में पुनः हिन्दू बन गये। अर्धमुस्लिम बनने के कारण इनमें सगोत्रीय विवाह जैसे अनेक म्लेच्छ संस्कार आ गए थे, जिनसे इनको निकाल कर सभ्य बनाने वाले नीलकंठवर्णी ही हैं।
- इसमें कोई अतिश्योक्ति नही है कि यदि नीलकंठ वर्णी न होते तो गुजरात की आधी जनसंख्या का खतना हो गया होता और आज सिंध के साथ वर्तमान गुजरात भी पाकिस्तान का हिस्सा होता।
- स्वामीनारायण जी स्वयं रामानुजाचार्य परम्परा से आते थे और आद्यगुरु रामानंद जी इनके दादागुरु थे। पीराना पंथ के विरुद्ध गुजरात में रामानुजाचार्य सम्प्रदाय के ही निर्मल दास बाबा ने भी कार्य किया था।
- स्वामीनारायण मंदिर के रुप में आज आबू धाबी में पुनः हिंदू संस्कृति का संचार हो रहा है।

❑❑❑

प्रिय पाठकगण,

''शाश्वत हिन्दू गर्जना'' पत्रिका के सम्बंध में अपने सुझाव एवं विचार कृपया इस व्हाट्सएप नम्बर पर अपना पूर्ण परिचय, पता एवं पासपोर्ट साइज फोटो सहित प्रेषित करें।

श्याम साहू - 9522525363

महाकौशल, बघेलखण्ड और बुंदेलखण्ड में होली

होली यह नाम सुनते ही प्रत्येक व्यक्ति का मन रंग बिरंगी फुहारों में झूम उठता है। होली का त्योहार हिंदी के अंतिम माह फागुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है। महाकौशल, बुंदेलखंड बघेलखंड में भी इस पर्व को समरसता आपसी सौहार्द के रूप में मनाया जाता है। फागुन-मास में होलिका अष्टक लगते ही प्रत्येक घरों में गोबर की मालिया (गोबर के छेद किए हुए दिये), गोबर की सूरत चंदा तथा गोबर, भूसा और कोयले के टुकड़ों को मिलाकर गोबर के बड़े-बड़े गोल-गोल लड्डू और कण्डे बनाकर धूप में सूखने रख दिए जाते हैं। घर की महिलाएँ गुझिया, सलोनी, चूड़ा, दही बड़े, पूरन पोली आदि की तैयारी करने लगती हैं। लोग भगवान के लिए गेंदा, गुलाब, टेसू पलाश आदि के फूलों को अलग-अलग एकत्रित करके रंग की तैयारी भी करने लगते हैं। कहीं-कहीं काजू, छुहारा, मुनक्का, सौंफ, इलायची मगज, खसखस, बादाम आदि को पानी में फुलाकर ठंडाई की तैयारी भी की जाती हैं।

फागुन पूर्णिमा को संध्या काल के पश्चात् आस-पड़ोस के सभी स्त्री-पुरुष, बच्चे मिलकर लकड़ी और गोबर के उपले (कण्डे) एकत्रित करके होलिका दहन की तैयारी करते हैं। चूंकि होलिका एक स्त्री थी अतः उनकी पूजा करते हैं पंच पकवानों का भोग लगाते हैं और होलिका ने अपनी देवीय शक्ति का दुरुपयोग किया था अतः उन्हें जला कर भक्त प्रहलाद को बचाकर सत्य की विजय हुई ऐसा मानते हुए सभी को गुलाल लगाते हैं।

होलिका दहन के पश्चात जलती हुई होली से छोटी सी जलती लकड़ी को संभाल कर घर लाया जाता है और उस लकड़ी से घर में रखी हुई गोबर की मलियों को जलाया जाता है ताकि घर से नकारात्मकता समाप्त हो। उसे जलती हुई अग्नि पर नये अनाज गेहूँ, चना आदि को भूंजते हैं और उन्हें खाते हैं। घर के प्रवेश द्वार पर गोबर के बने सूरज और चंदा को रस्सी से बांध के लटका दिया जाता है ताकि घर में कोई नकारात्मक शक्ति प्रवेश न करें।

फागुन पूर्णिमा के दूसरे दिन दुलारी पड़ती है इस दिन सभी एक दूसरे को रंग गुलाल लगाकर होली के बधाइयां देते हैं जिनके घरों पर दुखद घटना घटती है लोग उनके घर जाकर उनके दुख को बताते हैं ऐसा कहा जाता है कि लोग रंग गुलाल और धूल उड़ाते हुए होली खेलते हैं इसलिए इस दिन को धुरेड़ी भी कहते हैं पूर्णिमा के दूध तीसरे दिन द्वितीया तिथि पड़ती है जिसे बुंदेलखंड में भाई दूज के रूप में मनाते हैं इस दिन बहाने गोबर से कोतवाल दूध पड़रिया इत्यादि बनाकर अपने भाई की लंबी आयु के लिए दशामा माता की पूजा करती हैं सौतेली माता के किस्सा कहानी कहती है और कहानी के अंत में भटकटैया के पौधे की छोटी सी टहनी के साथ चुगली करने वाले कोतवाल को रखकर मुसल से कूटती हैं और अपने भाई के लिए मिलकर प्रार्थना करती हैं कि - जो कोई हमाए भैया को देखके जरे बरे ओकी आंखों में राई नोन पड़े इसके पश्चात् सभी बहनें अपने भाइयों के माथे पर गुलाल से टीका लगाते हुए मुंह मीठा करती हैं। पंचमी के दिन होली का त्योहार **'रंग पंचमी'** के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि हमारे प्राचीन भारत में जब विदेशी शत्रुओं ने भारत पर आक्रमण नहीं किया था उस समय हमारे परिवार की बेटियाँ बसंत पंचमी से रंग पंचमी तक एक माह के बसंत उत्सव में अपने पसंद के लड़के को ढूंढ कर रंग पंचमी के दिन अपने परिवार से उसे मिलती थी और उसके बाद उनके ब्याह के कार्य को प्रारंभ किया जाता था।

❑❑❑

✤ वदतु संस्कृतम् ✤

संस्कृत	हिन्दी
तद्विषये चिन्ता मास्तु।	– उस बात की चिन्ता न कीजिए।
तथैव इति न नियमः।	– ऐसा कोई नियम नहीं है।
कर्तु शक्यम्, किंचित् समयः अपेक्ष्यते।	– कर सकते हैं, पर समय चाहिए।
एतावत् तु तवान।	– इतना तो किया।
दृष्टम् एव न शक्यते।	– देख ही नहीं सकते।

डॉ. मनोज पाण्डेय, प्रांत संगठन मंत्री (संस्कृत भारती)

प्रेरक प्रसंग

वनवासी वृद्ध का मार्गदर्शन

एक बार शिवाजी युद्ध के पश्चात् बहुत थक गए। आसपास कुछ न देख वह एक वनवासी वृद्ध माता के घर में जा पहुँचे। बहुत भूख लगी थी अतः उन्होंने कुछ खाने के लिए माँगा। सैनिक समझकर वृद्ध माता ने उनके लिए प्रेमपूर्वक खिचड़ी पकाकर एक पत्तल पर परोस दी। शिवाजी को बहुत तेज भूख से लगी थी अतः उन्होंने शीघ्रता में खिचड़ी को बीचों-बीच खाने की चेष्टा करने लगे और अपनी उंगलियाँ जला बैठे। यह देखकर वृद्ध माता बोली, ''सैनिक! दिखने में तो आप समझदार दिखाई देते है फिर भी मूर्ख शिवाजी की भाँति कार्य कर रहे है।'' यह सुनकर शिवाजी के सचेत हो गए। वह बोले, ''माई! शिवाजी ने ऐसी क्या किया जो आप उनको मूर्ख बोल रही है और मेरी त्रुटि बताने की भी कृपा करें।''

वृद्ध माता बोली, ''सैनिक ! जिस तरह आप किनारे की ठंडी खिचड़ी खाने के स्थान पर बीच में अपना हाथ डालकर अपनी उंगलियाँ जला रहे है उसी तरह शिवाजी भी पहले छोटे-छोटे किलों को जीतकर अपनी शक्ति बढ़ाने के स्थान पर बड़े किलों पर धावा बोलकर पराजित हो रहे है। इसीलिए मैंने आपको शिवाजी की भाँति मूर्ख कहा।''

शिवाजी को अपनी हार का कारण समझ आ चुका था। अब उन्होंने पहले छोटे-छोटे किलों को जीतकर अपनी शक्ति बढ़ाना प्रारंभ कर दी और बाद में बड़े-बड़े किलों पर भी विजय प्राप्त की। शिवाजी को वृद्ध माता की सीख काम आई।

❑❑❑

होली पर्व

होरी की उमंग, रस रंग डूब गयो मन
काम की तरंग, अंग अंग में समाई है।
चंगनि को रोर है,मृदंगन को शोर कहूं,
ढप शोर बाजत, मधुर धुन छाई है।
झूमे गोप ग्वाल कहूं, नाचत गोपाल और,
राधिका के संग कहूं नाचत कन्हाई है।
बेलन की, वृक्षन की, पात-पात हरषत है,
बृज की अवनि, आज ऐसी हरषाई है।।

कल रंग में बोर गयो चुनरी,
अपनी बिरिया हठ ठानत है,
बच जाए ना भाग के श्याम कहूं,
इन गोपिन को पहचानता है,
दिन भंग तरंगिनि रंगन को,
हम जानत हैं, तुम जानत हो,
मोहे होरी में,चोरी है लाल कछु,
इन मोहिनी को पहचानत है ।।

ऐसे बोराने होरयारे।।
ऐसे बोराने होरियारे सब चीजें होरी में धर दईं।।

खिरयाने की बांगुर सारी, ढोर सार को फाटक धर दौ,
सपन्ना की टटिया टोरी, अरंगनी के अड़िया धर दै,
टोर घिनोची पटिया ले गए, बड़े कक्का की लठिया ले गए,
नब्बो बउ को मूसर ले गए, भूरी भैंस को खूंटा धर दौ।
ऐसे बोराने हुरयारे।।

मंझली बहू की कथरी ले गए,नई भौजी को साया धर दौ,
कंतो फुआ को लुंगरो ले गए, मनु मौसी की फरिया धर दौ,
गांव दामाद की धुतिया फारी,घुरू कक्का को कुर्ता,
मुखियाजी और पंडित जी को फार लंगोटा धर दौ।
ऐसे बोराने हुरयारे ।।

होरी जले,सब गांए कबीरा,करें पुजारी झंडा पूजा,
लोग-लुगाई,मोंड़ा-मोंड़ी,सब नच रये कोई कहे न दूजा,
नोंन राइ से नजर उतारे, झोंकरयावें गेहूं बलिया,
होरी आग से धरी अंगीठी, बामें सवई गुलरिया धर दैं।
ऐसे बोराने होरयारे।।

रंग में बोरें गोबर रगड़े, पटक पटक खबना में धर दै,
देवर भौजी की होली में, रडुआ सब आफत में पर गए,
उन्ना फार घसीटो जी भर,करिया कर दौ आगे-पीछे,
घेर के साबरी हंसी ठठाके,पूछे लाला नशा उतर गौ?
ऐसे बौराने होरियारे।।

सपर-खोर घर-घर पूजा भइ गूझा पपरिया डट के खा रहे,
फागें गा हर घर में जा रहे,समरसता को भाव जाग रहे,
फगुआ प्रेम भरो देवर से, पाय नबाड़ी फिरे इतरानी,
अगली-पिछली मन की गांठें
लगा गुलाल आग में धर दैं।
ऐसे बोराने होरियारे।

– पुरुषोत्तम शर्मा

❑❑❑

एक युग की समाप्ति !

इक्कीसवीं सदी में जिनधर्म के मूर्तिमान स्वरूप, जिनवाणी के अनन्य साधक, अनेकांत एवं स्यादवाद के दिव्य संवाहक, जैन आदर्शों को अपनी चर्या से प्रतिपादित करने वाले युग दृष्टा, संत शिरोमणि आचार्य प्रवर श्री विद्यासागर जी महामुनिराज दिनांक 17 फरवरी 2024 शनिवार तदनुसार माघ शुक्ल अष्टमी पर्वराज के अंतर्गत उत्तम सत्य धर्म के दिन रात्रि में 2:35 बजे ब्रह्म में लीन हो गए।

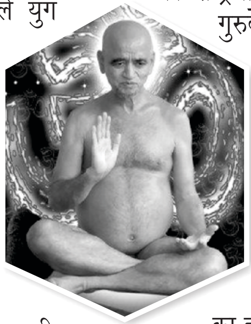

उनका जन्म 10 अक्टूबर 1946 को विद्याधर के रूप में कर्नाटक के बेलगाँव जिले के सदलगा में शरद पूर्णिमा के दिन हुआ था। उनके पिता श्री मल्लप्पा और उनकी माता श्रीमंती थी। विद्यासागर जी को 30 जून 1969 में अजमेर में 22 वर्ष की आयु में आचार्य ज्ञानसागर ने दीक्षा दी जो आचार्य शांतिसागर के वंश के थे। आचार्य विद्यासागर को 22 नवम्बर 1972 में ज्ञानसागर जी द्वारा आचार्य पद दिया गया था। तब तक उनके माता-पिता और भाई सभी घर के लोग संन्यास ले चुके हैं। उनके पिता मुनि मल्लिसागर बने। उनकी माता आर्यिका समयमति बनी। उनके भाई अनंतनाथ और शांतिनाथ ने आचार्य विद्यासागर से दीक्षा ग्रहण की और मुनि योगसागर और मुनि समयसागर कहलाये। उनके बड़े भाई भी उनसे दीक्षा लेकर मुनि उत्कृष्ट सागर जी महाराज कहलाए। आचार्य विद्यासागर संस्कृति, प्राकृति, कन्नड़, हिन्दी, मराठी आदि भाषाओं में विशेष स्तर का ज्ञान रखते थे। 2001 तक उनके लगभग 21 दिगम्बर साधु आचार्य विद्यासागर के आज्ञा से चर्या करते हैं।

राम जन्मभूमि अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा समारोह हेतु श्रीराम हमारे पूर्वज है इन वाक्यों से संपूर्ण जैन समाज को एकत्र होकर सहभाग करने का आग्रह करने वाले **''इंडिया नहीं भारत कहिए''** का राष्ट्रघोष करने वाले राष्ट्रसंत के प्रखर प्रणेता परम पूज्य गुरुदेव ने विधिवत सल्लेखना सम्यक भाव से धारण कर ली थी एवं पूर्ण जागृतावस्था में आचार्य पद का त्याग करते हुए तीन दिवस के उपवास गृहण करते हुए आहार एवं संघ का प्रत्याख्यान कर दिया था और अखंड मौन धारण कर लिया था। 6 फरवरी मंगलवार को दोपहर शौच से लौटने के उपरांत साथ के मुनिराजों को अलग भेज कर निर्यापक श्रमण मुनिश्री योग सागर जी से चर्चा करते हुए संघ संबंधी कार्यों से निवृत्ति ली और आचार्य पद का त्याग करते हुए प्रथम मुनि शिष्य निर्यापक श्रमण मुनि श्री समयसागर जी महाराज को आचार्य पद सौंपने की घोषणा कर दी। परमपूज्य गुरूदेव ने पूरी जागृत अवस्था में अंत समय तक प्रभु स्मरण के साथ उपस्थित निर्यापक श्रमण मुनियों की उपस्थिति और संबोधन के दौरान नश्वर देह का चन्द्रगिरि तीर्थ पर त्याग कर दिया। गुरुवरश्री जी का डोला चंद्रगिरी तीर्थ डोंगरगढ में 18 फरवरी 2024 को 2:35 पर सल्लेखना व्रत द्वारा समतापूर्वक समाधिमरण चन्द्रगिरि तीर्थ पर ही पंचतत्व में विलीन किया गया।

संत के दर्शन पुण्य है, संत ही तीरथ रूप।
काल पाय तीरथ फलै, तुरतहि संत अनूप।।

संत का दर्शन बहुत पुनीत होता है, संतजन तीर्थ के समान होते हैं। जिनके दर्शन का शीघ्र फल मिलता है। ऐसे युगपुरुष के चरणों में विनम्र नमन ! ❏❏❏

संघ की ओर से श्रद्धांजलि

महान तीर्थंकरों की श्रेष्ठतम परंपराओं को अपने जीवन में साक्षात करने वाले जैन धर्म के महान आचार्य पूज्य श्री विद्यासागर जी महाराज का शरीर आज प्रातः डोंगरगढ़ - राजनंदगांव (छत्तीसगढ़) में पूर्ण हो गया। पूज्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने 1968 में दिगंबरी दीक्षा ली थी और तब से आज तक वे निरंतर सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अचौर्य, ब्रह्मचर्य की साधना करते हुए इन पंच महाव्रतों के देशव्यापी प्रचार हेतु समर्पित हो गए। लोक कल्याण की भावना से अनुप्राणित होकर पूज्य आचार्य श्री महाराज ने अपने जीवन में सैकड़ों मुनियों एवं आर्यिकाओं को दीक्षा प्रदान की और लोकोपकारी कार्यों हेतु सदैव अपनी प्रेरणा और आशीर्वाद प्रदान किया। संपूर्ण भारतवर्ष में उन्होंने अनेक स्थानों पर गौशालाएं, शिक्षा संस्थान, हथकरघा केंद्र तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की लोकमंगलकारी योजनाओं का शुभारंभ कराया। अनेक कारागारों में वहां रह रहे हजारों लोगों के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन करने का अभूतपूर्व कार्य आपके आशीर्वाद से ही चल रहा है। उनकी यही अभिलाषा थी कि यह देश अपनी उदात्त शिक्षाओं और जीवनादर्शों को लेकर पुनः खड़ा हो और वर्तमान समय में विश्व को नई दिशा प्रदान करे। उनका संपूर्ण जीवन इन आदर्शों के प्रति पूरी तरह समर्पित था। अंतिम श्वांस तक अपने कठोर साधनाव्रत का निर्वाह किया। लाखों लोग उन आदर्शों पर आज चल रहे हैं। उनके चले जाने का दुःख तो सभी को होना स्वाभाविक ही है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उनके द्वारा दिग्दर्शित इस मार्ग पर हम सभी लोग और अधिक बढ़ता और समर्पित भाव से निरंतर आगे बढ़ते रहें तथा उन आदर्शों को तीव्र गति प्रदान करें। हम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

डॉ. मोहन भागवत, सरसंघचालक,
दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

कर्त्तव्य पथ पर मप्र की आत्मनिर्भर मातृशक्ति की झलक

इस वर्ष भारत ने अपना 75 वाँ गणतंत्र दिवस मनाया। इसका आयोजन भारत के रक्षा मंत्रालय द्वारा किया जाता है। मंत्रालय अपनी सैन्य शक्ति का प्रदर्शन करने के साथ – साथ भारत की विविध संस्कृति को भी प्रदर्शित करता है।

इस बार की परेड में 80 प्रतिशत महिलाएँ सम्मिलित हुई। इस अवसर पर सेनाओं की तीनों महिला टुकड़ी आकर्षण का केन्द्र रहीं। इसीलिए इस ऐतिहासिक गणतंत्र दिवस का ध्येय वाक्य **'विकसित भारत और भारत लोकतंत्र की मातृका'** है।

राष्ट्रपति महामहिम द्रोपदी मुर्मू ने दिल्ली स्थित कर्तव्य पथ पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया। 75 वें गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों सम्मिलित हुए। परेड का प्रारंभ सैन्य बैंड से हुआ, किन्तु इस बार देशभर की 100 महिला कलाकारों ने पारंपरिक वाद्यों के साथ परेड को प्रारंभ किया। इससे पूर्व सभी कलाकार और समूह सलामी मंच के सामने अपनी प्रस्तुति देते थे परन्तु इस बार एक नई पहल की गई, जिसमें मात्र एक समूह ने सलामी मंच के सामने अपनी प्रस्तुति दी और शेष अन्य 11 समूहों ने अलग-अलग प्रस्तुति दी। सलामी मंच की प्रस्तुति में हुए इस नवाचार से सभी दर्शकों को असीम आनन्द की अनुभूति हुई।

मध्यप्रदेश को चार वर्षों के पश्चात् कर्तव्य पथ पर झांकी परेड में प्रदेश की झांकी प्रस्तुत करने का अवसर मिला। प्रदेश ने इस वर्ष झांकी का विषय **''विकास का मूल मंत्र – आत्मनिर्भर नारी''** है। यह झांकी मध्यप्रदेश की प्रगतिशील नारी शक्ति पर केन्द्रित है। इस झांकी में मध्यप्रदेश में महिलाओं के सशक्तिकरण, आत्मनिर्भर महिलाओं के साथ चंदेरी कला को भी दर्शाया गया है। इसमें **'भारत की बाजरा महिला'** की टैगलाइन के साथ मध्य प्रदेश की जनजातीय महिला लहरी बाई की प्रतिकृति भी शामिल थी।

झांकी के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया गया कि मध्यप्रदेश ने अपनी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को सीधे विकास प्रक्रिया में शामिल करने में सफलता प्राप्त की है।

झांकी को देखने से पर यह स्पष्ट हुआ कि झांकी के अग्रभाग पर भारतीय वायु सेना की पहली महिला फाइटर पायलट मध्य प्रदेश के रीवा जिले की अवनी चतुर्वेदी की प्रतिमा के साथ एक लड़ाकू विमान का मॉडल सजाया गया। झांकी के मध्य भाग में विश्व स्तर में प्रसिद्ध चंदेरी, माहेश्वरी और बाघ प्रिंट की साड़ियों के साथ मध्य प्रदेश की स्वदेशी कला और संस्कृति को प्रदर्शित किया गया। झांकी के अंतिम भाग में गोंड जनजाति कलाकार पद्मश्री दुर्गा बाई द्वारा चित्रित चित्र और एक महिला कारीगर द्वारा बनाई गई पत्थर की नक्काशी दिखाई गई। झांकी के पिछले हिस्से में मिलेट वुमन ऑफ इंडिया और बाजरा मिशन की ब्रांड एम्बेसडर मध्य प्रदेश के डिंडोरी जिले की लहरी बाई को दर्शाया गया। सबसे निचले हिस्से को बाजरा से बनी महिलाओं को चित्रित करने वाली भित्तिचित्रों से सजाया गया था। पूरी झांकी में मालवा क्षेत्र की महिलाओं को भी दिखाया गया, जो अपने पारम्परिक नृत्य प्रदर्शन के साथ राज्य की जीवंत संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर रही थीं।

❑❑❑

झांकी की विशेषता-
- चंदेरी कला को दर्शाया
- भारत की बाजरा महिला टैग लाइन
- लहरी बाई की प्रतिकृति भी शामिल
- रीवा जिले की अवनी चतुर्वेदी भी है।

विकसित भारत के लिए स्वदेशी तकनीकें

अंकित राय
प्रांत संगठन मंत्री
विज्ञान भारती

भारत, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विविध विरासत के साथ, विकसित भारत, एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में एक परिवर्तनकारी यात्रा पर है। इस विकास के केंद्र में स्वदेशी प्रौद्योगिकियों की भूमिका है जो नवाचार, स्थिरता और समावेशिता के सार को समाहित करती है। विकसित और आत्मनिर्भर भारत के पथ को आकार देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को प्रदर्शित करने वाली स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के महत्वपूर्ण योगदान निम्नलिखित हैं।

कृषि क्रांति : स्वदेशी प्रौद्योगिकियों ने कृषि परिदृश्य में क्रांति ला दी है, किसानों को सशक्त बनाया है और टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा दिया है। सटीक खेती, ड्रिप सिंचाई और जैविक खेती के तरीकों जैसे नवाचारों ने न केवल कृषि उत्पादकता में वृद्धि की है बल्कि पर्यावरणीय प्रभाव को भी कम किया है। किसान सुविधा ऐप जैसी प्रौद्योगिकियां किसानों को मौसम, बाजार की कीमतों और फसल सलाह पर वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करती हैं, जिससे उन्हें सूचित निर्णय लेने के लिए ज्ञान के साथ सशक्त बनाया जाता है।

एग्रीस्टैक : कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने ''एग्रीस्टैक'' के निर्माण की योजना बनाई है, जो कि कृषि में प्रौद्योगिकी आधारित हस्तक्षेपों का संग्रह है। यह किसानों को कृषि खाद्य मूल्य श्रृंखला में एंड टू एंड सेवाएँ प्रदान करने हेतु एक एकींत मंच का निर्माण करेगा।

डिजिटल कृषि मिशन : कृषि क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ब्लॉकचेन, रिमोट सेंसिंग और **GIS** तकनीक, ड्रोन व रोबोट के उपयोग जैसी नई तकनीकों पर आधारित परियोजनाओं को बढ़ावा देने हेतु सरकार द्वारा वर्ष 2021 से वर्ष 2025 तक के लिये यह पहल शुरू की गई है।

एकीकृत किसान सेवा मंच (UFSP) : यह कोर इंफ्रास्ट्रक्चर, डेटा, एप्लीकेशन और टूल्स का एक संयोजन है जो देश भर में कृषि पारिस्थितिकी तंत्र में विभिन्न सार्वजनिक व निजी आईटी प्रणालियों की निर्बाध अंतः क्रियाशीलता को सक्षम बनाता है।

कृषि में राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना (NEGP & A) : यह एक केंद्र प्रायोजित योजना है, इस योजना को वर्ष 2010-11 में 7 राज्यों में प्रायोगिक तौर पर शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य किसानों तक समय पर कृषि संबंधी जानकारी पहुँचाने के लिये सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का उपयोग कर भारत में तेजी से विकास को बढ़ावा देना है।

वर्ष 2014-15 में इस योजना का विस्तार शेष सभी राज्यों और 2 केंद्रशासित प्रदेशों में किया गया था।

कृषि मशीनीकरण पर उप-मिशन (SMAM) : इस योजना के तहत विभिन्न प्रकार के कृषि उपकरण और मशीनरी की खरीद के लिये सब्सिडी प्रदान की जाती है।

अन्य डिजिटल पहलें : किसान कॉल सेंटर, किसान सुविधा एप, कृषि बाजार एप, मृदा स्वास्थ्य कार्ड (SHC) पोर्टल आदि।

नवीकरणीय ऊर्जा समाधान : स्थिरता की खोज में, भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में स्वदेशी प्रौद्योगिकियों को अपनाया है। सौर ऊर्जा प्रौद्योगिकियों, पवन ऊर्जा समाधानों और बायोमास-आधारित ऊर्जा उत्पादन का विकास और कार्यान्वयन अपने कार्बन पदचिह्न को कम करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता का उदाहरण है। राष्ट्रीय सौर मिशन और ''उजाला'' जैसी पहलों ने नवकरणीय ऊर्जा स्रोतों को अपनाने में उल्लेखनीय वृद्धि की है, जिससे स्वच्छ और हरित भविष्य में योगदान मिला है। हाल ही में 22 जनवरी को राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के उपरांत सूर्योदय योजना का शुभारंभ किया है जिसमें एक करोड़ घरों की छत पर सोलार पेनल लगाने की बात कही। यह योजना ऊर्जा उत्पादन में बड़ा कदम साबित होगी।

डिजिटल इंडिया पहल : डिजिटल इंडिया पहल समावेशी विकास के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने में आधारशिला रही है। स्वदेशी प्रौद्योगिकियाँ, जैसे एकीकृत भुगतान इंटरफेस (यूपीआई), आधार-सक्षम सेवाओं और भारत नेट ने दूरदराज के क्षेत्रों में भी वित्तीय समावेशन, डिजिटल साक्षरता और निर्बाध कनेक्टिविटी की सुविधा प्रदान की है। डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने से न केवल दक्षता बढ़ी है बल्कि उधमिता और नवाचार के लिए नए रास्ते भी खुले हैं।

हेल्थकेयर टेक्नोलॉजीज : मौजूदा वैश्विक स्वास्थ्य चुनौतियों ने मजबूत स्वास्थ्य देखभाल बुनियादी ढांचे के महत्व को रेखांकित किया है। किफायती चिकित्सा उपकरणों के विकास से लेकर टेलीमेडिसिन समाधान तक, स्वदेशी प्रौद्योगिकियों ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कोविड-19 ट्रैकिंग के लिए आरोग्य सेतु ऐप, कम लागत वाले डायग्नोस्टिक उपकरण और वैक्सीन विकास में प्रगति जैसे नवाचार स्वास्थ्य देखभाल प्रौद्योगिकी में भारत की शक्ति को दर्शाते हैं।

टीका - ZYCOV-D

परिचयः- दुनिया की पहली और भारत की स्वदेशी रूप से विकसित डीएन एवैक्सीन।

विवरणः- एक डीएन एप्लास्मिड-आधारित COVID-19 वैक्सीन है, जिसे भारतीय दवा कंपनी कैडिला हेल्थ केयर ने जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद के सहयोग से विकसित किया है। ❑❑❑

शांति के लिए जल का प्रयोग

वर्ष 2024 में विश्व जल दिवस का विषय है **'शांति के लिए जल का प्रयोग'** विश्व जल दिवस 22 मार्च को प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व के सभी देशों में स्वच्छ एवं सुरक्षित जल की उपलब्धता सुनिश्चित करवाना है साथ ही जल संरक्षण के महत्व पर भी ध्यान केंद्रित करना है। ब्राजील में रियो डी जेनेरियो में वर्ष 1992 में आयोजित पर्यावरण तथा विकास का संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्व जल दिवस मनाने की पहल की गई तथा वर्ष 1993 में संयुक्त राष्ट्र ने अपने सामान्य सभा के द्वारा निर्णय लेकर इस दिन को वार्षिक कार्यक्रम के रूप में मनाने का निर्णय लियां **इस कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों के बीच में जल संरक्षण का महत्व साफ पीने योग्य जल का महत्व आदि बताना था।**

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, लगभग 4 बिलियन लोग वर्ष में कम से कम एक महीने के लिए पानी की भारी कमी का अनुभव करते हैं और लगभग 1.6 बिलियन लोग - दुनिया की आबादी का लगभग एक चौथाई - एक स्वच्छ, सुरक्षित जल आपूर्ति तक पहुँचने में समस्याएं हैं। यह निर्विवाद सत्य है कि सभी जीवित प्राणियों की उत्पत्ति जल में हुई है। वैज्ञानिक अब पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य ग्रहों पर पहले जल की खोज को प्राथमिकता देते हैं। पानी के बिना जीवन जीवित ही नहीं रहेगा। इसी कारणवश अधिकांश संस्कृतियाँ नदी के जल के किनारे विकसित हुई हैं। इस प्रकार **'जल ही जीवन है'** का अर्थ सार्थक है। दुनिया में, 99 प्रतिशत पानी महासागरों, नदियों, झीलों, झरनों आदि के अनुरूप है। केवल 1 प्रतिशत या इससे भी कम जल पीने के लिए उपयुक्त है। हालाँकि, जल की बचत आज की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। केवल जल की कमी जल के अनावश्यक उपयोग के कारण है। बढ़ती जनसंख्या और इसके परिणामस्वरूप बढ़ते औद्योगिकीकरण के कारण, शहरी माँग में वृद्धि हुई है और पानी की खपत बढ़ रही है। आप सोच सकते हैं कि एक मनुष्य अपने जीवन काल में कितने जल का उपयोग करता है, किंतु क्या वह इतने जल को बचाने का प्रयास करता है? असाधारण आवश्यकता को पूरा करने के लिए, जलाशय गहरा गया है। इसके परिणामस्वरूप, जल में लवण की मात्रा में वृद्धि हुई है।

वैश्विक जल संरक्षण के वास्तविक क्रियाकलापों को प्रोत्साहन देने के लिये **'विश्व जल दिवस'** को सदस्य राष्ट्र सहित संयुक्त राष्ट्र द्वारा मनाया जाता हैं।

स्त्रियोद्धार एवं पीड़ितों के लिए पूर्णाहुति : वीरांगना सावित्री बाई फुले

आधुनिक भारत की प्रथम महिला शिक्षक, मराठा आदिकवयित्री,नारी शिक्षा और सुधार की प्रथम महानायिका -वीरांगना सावित्री बाई फुले। आईये, 19वीं सदी में स्त्रियों के अधिकारों, अशिक्षा, छुआछूत, सतीप्रथा, बाल या विधवा-विवाह जैसी कुरीतियों पर आवाज उठाने वाली देश की पहली महिला शिक्षिका को जानते हैं?

सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 में महाराष्ट्र के सतारा जिले में स्थति नायगांव नामक छोटे से गांव में हुआ था। तत्कालीन प्रचलित परंपराओं के परिप्रेक्ष्य में 9 साल की छोटी उम्र में पूना के रहने वाले ज्योतिबा फुले के साथ उनकी शादी हो गई थी।

आपने अपने पति समाज सुधारक ज्योतिबा फुले से पढ़कर सामाजिक चेतना को पल्लवित और पुष्पित किया। उन्होंने अंधविश्वास और रूढ़ियों की बेड़ियां तोड़ने के लिए लंबा संघर्ष किया और विजय प्राप्त की। सावित्रीबाई ने छुआ-छूत, सतीप्रथा, बाल और विधवा विवाह निषेध के विरुद्ध पति के साथ काम किया। आधुनिक भारत में बरतानिया काल में स्वयं पढ़ीं, ज्योतिबा राव फुले के साथ मिलकर लड़कियों के लिए 18 स्कूल खोले, नारी शिक्षा की अग्रदूत बनीं। सावित्रीबाई ने लड़कियों के लिए तब स्कूल खोले जब बालिकाओं को प्रकारांतर से पढ़ाना-लिखाना सही नहीं माना जाता था।

वही लगन थी कि एक दिन उन्होंने खुद पढ़कर अपने पति ज्योतिबा राव फुले के साथ मिलकर लड़कियों के लिए 18 पाठशालाएं स्थापित कीं। यहां यह स्पष्ट कर दें कि वर्ष 1848 में महाराष्ट्र के पुणे में देश की सबसे पहले बालिका पाठशाला स्थापित की गई थी। वहीं, अठारहवीं पाठशाला भी पुणे में ही स्थापित की गई थी। उन्होंने 28 जनवरी, सन् 1853 को गर्भवती, दुराचार पीड़ितों के लिए बाल हत्या प्रतिबंधक गृह की स्थापना की। पाठशाला के लिए निकलीं तो पत्थर खाए! बताते हैं कि ये वो दौर था कि सावित्रीबाई फुले पाठशाला जाती थीं, तो लोग पत्थर मारते थे। इस सबके बाद अंततः विजय सावित्री बाई फुले की ही हुई। सावित्रीबाई फुले एक कवयित्री भी थीं। उन्हें मराठी की आदि कवयित्री के रूप में भी जाना जाता है।

❑❑❑

शहडोल की हल्दी को मिला जी आई टैग

शहडोल। हल्दी को 'एक जिला एक उत्पाद' के अंतर्गत जीआई टैग दिया गया है। जीआई टैग (भौगोलिक संकेत) से तात्पर्य एक ऐसे स्थान से है जो किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित उत्पाद को दिया जाता है। उस विशेष उत्पाद की गुणवत्ता, प्रतिष्ठा और किसी भी अन्य विशेषताओं को सामान्य रुप से उत्पाद की भौगोलिक उत्पत्ति के आधार पर चुना जाता है।

'शहडोल में हल्दी की खेती के लिए यहाँ की जलवायु उन्नत है, इसलिए जिले में हल्दी का भरपूर उत्पादन होता है। यहाँ के जनवासी किसान सरिहट हल्दी की खेती करते हैं। जिले के गोहपारु, जय सिंहनगर एवं बुढ़ार के करीब 2000 से अधिक किसान हल्दी की खेती करते हैं, यहाँ का प्रत्येक किसान पाँच से आठ क्विंटल हल्दी का उत्पादन करता है। विशेष गुणवत्ता वाली होने के कारण शहडोल की हल्दी की माँग देश भर में है।'

हल्दी को जीआई टैग मिलने से इसके किसानों को अब नये बाजार मिलने में सहयोग मिलेगा। खरीदारों को भी अच्छा सामान मिल सकेगा। विश्व बाजार में हल्दी को लेकर भारत की हिस्सेदारी 62 प्रतिशत से अधिक है। वर्ष 2022-23 में लगभग 380 से अधिक निर्यातकों ने 207.45 मिलियन अमरीकी डालर कीमत की 1.534 लाख टन हल्दी और हल्दी उत्पादों का निर्यात किया। उनमें अमेरिका, मॉरीशस, बांग्लादेश, संयुक्त अरब अमीरात और मलेशिया सम्मिलित हैं।

सागर में काले आलू की खेती का नवाचार

भारत में दक्षिण अमेरिका के काले आलू की खेती अब बुंदेलखंड के सागर में प्रारंभ हो गई है। ग्राम कपूरिया सागर में अब किसान परंपरागत खेती से हटकर नई फसलों पर ध्यान दे रहे हैं। सागर के युवा किसान दक्षिण अमेरिका में उगने वाले कल आलू की खेती कर रहे हैं। इससे 1 वर्ष में अनुमानित रूपये 50 हजार तक की आय अर्जित हो रही है। काले आलू अपने आप में एक औषधि फसल है, इसके गुण और मूल्य सफेद आलू की तुलना में बहुत अधिक है।

'ग्राम कपूरिया के किसान आकाश चौरसिया ने लगभग 15 वर्ष पूर्व मल्टीलेयर पद्धति से जैविक खेती प्रारंभ की थी। अब उसके अनुसार दूसरे किसान भी उससे प्रेरित हो कर काले आलू की खेती कर रहे हैं। आकाश के पास लगभग 16 एकड़ की भूमि है, जिसमें से एक एकड़ पर वह काले आलू की फसल लग रखी है। आकाश ने सागर समेत बुंदेलखंड में पहली बार काले आलू का उत्पादन किया।'

उन्होंने एक एकड़ में यह फसल लगाई थी इसमें अनुमानित 100 क्विंटल पैदावार हुई । इस समय वह मध्य प्रदेश समेत उत्तर प्रदेश के किसानों को भी काले आलू को उगाने की विधि को सिखा रहे हैं।

काले आलू की खेती दक्षिण अमेरिका के एंडीज पर्वतीय क्षेत्रों में की जाती है। इसकी फसल 3 माह में आ जाती है। इस आलू की ऊपरी सतह काली और आंतरिक भाग गहरे बैगनी रंग का होता है। काले आलू की खेती करने में एक एकड़ में किसानों को लगभग रूपये 50 हजार का व्यय आता है और 5 लाख रूपये की आय। यह फसल बुआई के 90 दिनों के पश्चात् तैयार हो जाता है। इसके औषधि गुण अधिक होने के कारण यह 70 से 90 रूपये प्रति किलो तक बिकता है, जो सफेद आलू की अपेक्षा महंगा है। इस आलू को लगभग 1 से 2 महीने तक सेवन करने से आयरन की कमी दूर होती है।

❑❑❑

पंजीकृत समाचार पत्र सम्बंधी घोषणा पत्र -फार्म-4 (नियम 8)

शाश्वत हिन्दू गर्जना(मासिक) (RNI No.-69274/94)

प्रकाशन स्थल	-	विश्व संवाद केन्द्र महाकौशल जबलपुर
मुद्रक का पता	-	दि ग्रेनेडियर्स एसोसियेशन प्रिंटिंग प्रेस, सदर, जबलपुर
प्रकाशक	-	श्री नरेन्द्र जैन, न्यासी
राष्ट्रीयता	-	भारतीय
पता	-	प्लाट नं. 1, म.नं. 1692, नव आदर्श कालोनी, गढ़ा रोड, जबलपुर(म.प्र.)
सम्पादक	-	डॉ. किशन कछवाहा
राष्ट्रीयता	-	भारतीय
पता	-	विश्व संवाद केन्द्र महाकौशल प्लाट नं. 1, म.नं. 1692, नव आदर्श कालोनी, गढ़ा रोड, जबलपुर(म.प्र.)

मैं, नरेन्द्र जैन एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सही है।

अपठित हस्ताक्षर

EKLAVYA UNIVERSIT
ज्ञानप्राप्तये लक्ष्यसन्धानम्
Sagar Road, Damoh (MP) India
Estd. by Madhya Pradesh Niji Vishwavidyalaya (Sthapana Avam Sanchalan) Adhiniyam 2021, estd. Sept. 2020 and Reinstated, 30th March 2021, No. 184
•Registered under UGC 2(f)/12(b) Act 1956
COURSES APPROVED

Admission Open for 2023-24

Ph.D. Masters, Bachelor, Diploma & Certificates in

Engineering, Computer Science, Basic and Applied Sciences, Forensic Science, Agriculture, Library Science, Management, Education, Physical Education, Commerce, Nursing, Paramedical Sciences, Fashion Design, Social Work, Performing Arts, Fine Arts, Arts & Humanities, Yoga/Naturopathy

Notifications will soon be issued for Full Time/ Part Time Ph.D. Entrance Examination in all the subjects.

Applications are invited for the following posts

- Deputy & Asst. Registrars
- Dean Academics
- Dean Student Welfares
- Dean Research
- Director Admissions
- Proctor
- Administrator
- Training & Placement Officer
- Computer Operators
- Office Executives
- Counsellors
- Admission Officers
- Private Assistance
- Purchase Executives
- HR Managers
- Accounts & Finance Executives

Professor, Associate Professor, Assistant Professor in
- Management
- Commerce
- Education
- Physical Education
- Library Science
- Journalism
- Agriculture
Agronomy, Horticulture, Soil Science, Genetics & Plant Breeding (GPB), Plant Pathology, Seed Technology, Agricultural Extension & Communication
- Naturopathy & Yogic Sc.
- Nursing
Child Health, Mental Health, Obstetrics & Gyanecology, Community Health, Medical, Surgical
- Paramedical Sciences
- History
- Geography
- Sociology
- Economics
- Political Science
- Psychology
- Hindi Lit.
- English Lit.
- Sanskrit Lit.
- Jain & Prakrit
- Philosophy
- Zoology
- Botany
- Chemistry
- Physics
- Mathematics
- Microbiology
- Biochemistry | Biotechnology
- Forensic Science
- Computer Application
- Design
Fashion Design
- Fine Arts
Drawing & Painting, Sculpture, Applied Arts
- Performing Arts
Vocal Music, Swar Vadya, Sugam Sangeet, Kathak, Bharatnatyam, Oddisi
- Engineering
Civil, Mechanical, Electrical & Electronics, Computer Science, Electronics & Comm.

Walk-in interview on Sunday, 4 June 2023, at university campus

- Qualifications and experience as per UGC norms. Salary as negotiated.
- University reserves the right, not to fill any of the above positions.
- Aplication on plain paper containing details of High School, Intermediate, Graduation, Post Graduation, Ph.D. along with attested photocopies of testimonials/ Certificates with complete Resume and two passport size photographs should reach the Registrar or e-mail (hr@eklavyauniversity.ac.in) within 7 days of the publication of this advertisementt. or Contact : 7987358612 (HR)

YOUR Future Choice
विषय का चयन भविष्य की दिशा तय करता है....
अपने भविष्य को सही दिशा दें...

www.eklavyauniversity.ac.in | email: info@eklavyauniversity.ac.in
7999589970 | 9753040755 | 7987358612
Stay Connected
हमसे जुड़े रहें

विश्व संवाद केन्द्र महाकौशल

शाश्वत हिन्दू गर्जना (मासिक)
महाकौशल संदेश (साप्ताहिक)

@vskmahakoshalofficial
@vskmahakoshal
vskmahakoshal
@vskmahakoshal
VSK mahakoshal
vskjabalpur.org

विश्व संवाद केन्द्र महाकौशल प्रांत के अधिकृत उपरोक्त सभी प्लेटफार्म्स को अधिक से अधिक लाईक शेयर, कमेंट और फॉलो करें।

वक्तव्य

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

कांग्रेस देश की सेना का अपमान करने से कभी पीछे नहीं हटती। कांग्रेस ने हमेशा सेना और उसके पराक्रम पर सवाल उठाया है, सबूत मांगा है।

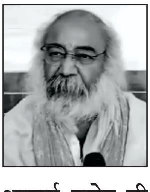

आचार्य प्रमोद जी

पाकिस्तान जिंदाबाद का नारा लगाने वाले सांसद को पाकिस्तान भेज देना चाहिए।

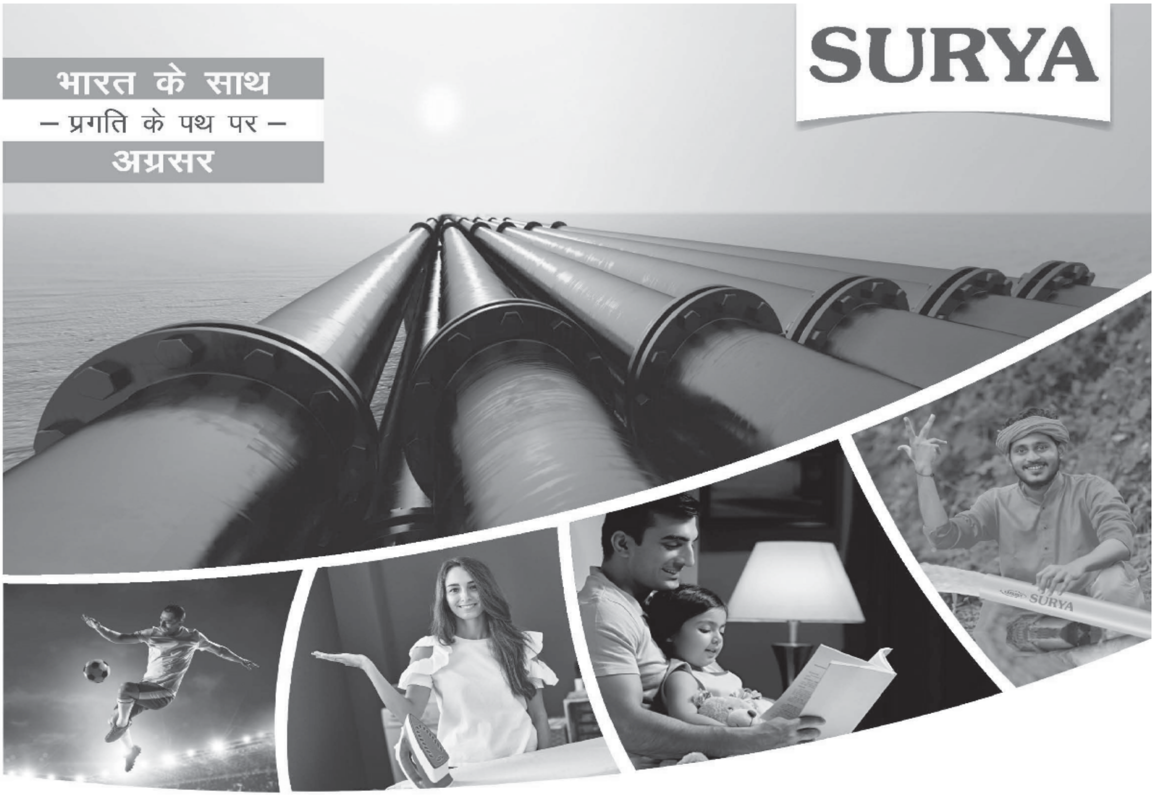

हमारे अनेक अत्याधुनिक उत्पादों के संग पूरा भारत एक है। हर भारतीय घर रोशनी से जगमग है। देश बदलने वालों के लिए हम नई रोशनी है। नए - नए कीर्तिमान कर रहे हैं। व्यवसाय जगत में दुनिया की रुझान समझते हैं। चुनौतियों को भांप लेते हैं और फिर खुद को तेजी से बदल लेते हैं। काम करने का तरीका बेहतर बना रहे हैं और अच्छे परिणाम दे रहे हैं। भारत की तरह, जो लगातार तरक्की कर रहा है, नई ऊंचाई को छू रहा है, सूर्या ने भी पिछले 5 दशकों में सफलता की जो कहानी लिखी है वह अविश्वसनीय है

सन् 1973 में शुरुआत कर सूर्या ने एक लंबा और स्वर्णिम सफर तय किया है।

I am SURYA | CELEBRATING 50 YEARS OF TRUST | DURABLE PRODUCTS FOR ALL SEGMENTS | ASSURED QUALITY

CONSUMER LIGHTING | PROFESSIONAL LIGHTING | APPLIANCES | FANS | PVC PIPES | STEEL PIPES

SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in I www.surya.co.in I Tel.: +91-1147108000
Toll Free No.: 1800 102 5657
/suryalighting I /surya_roshni

वारासिवनी में छत्रपति ''शिवाजी महाराज ज्ञान परीक्षा'' का आयोजन

350 वें हिंदवी स्वराज वर्ष के उपलक्ष्य में नगर वारासिवनी में छत्रपति शिवाजी महाराज ज्ञान परीक्षा का आयोजन किया गया जिसमें नगर के 17 विद्यालयों के छटवी से नवमी कक्षा के विद्यार्थियों ने भाग लिया। परीक्षा हेतु सर्वप्रथम शिवाजी महाराज संबंधी 1000 पुस्तक, 1000 विद्यार्थियों को अध्ययन करने हेतू शुल्क लेकर दी गयी, उस पुस्तक से संबंधित प्रश्न से ही प्रश्नपत्र बनाया गया। छत्रपति शिवाजी महाराज ज्ञान परीक्षा दिनांक 11 फरवरी 2024 को केशव इंग्लिश स्कूल में आयोजित की गई जिसमें 800 से अधिक विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

छत्रपति शिवाजी महाराज जन्मोत्सव समिति द्वारा छत्रपति शिवाजी महाराज के 350 वें हिंदवी स्वराज वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित **''छत्रपति शिवाजी महाराज ज्ञान परीक्षा''** का परिणाम परशुराम भवन में घोषित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि हरकचंद्र टेम्भरे (वरिष्ठ समाजसेवी), टी सी डायरे (अधिवक्ता) एवं विजय वहीले (परीक्षा संयोजक) मंचासीन रहे।

ये छात्र हुए पुरस्कृत

☛ शांभवी संजय मांधाता	₹5001	केशव हायर सेकंडरी इंग्लिश स्कूल
☛ आदित्रि शिवदयाल बोपचे	₹3001	केशव हायर सेकंडरी इंग्लिश स्कूल
☛ आयशा फिरदोश हुसैन	₹1000	आइडियल एकेडमी वारासिवनी
☛ वैशाली निरंजन डायरे	₹1000	केशव हायर सेकंडरी इंग्लिश स्कूल
☛ प्रांजल विश्वजीत तोमर	₹1000	आइडियल एकेडमी वारासिवनी
☛ मोनिका मुकेश बघेल	₹1000	आइडियल एकेडमी वारासिवनी
☛ त्रिशा झनकार डहरवाल	₹1000	सी एम राइस स्कूल वारा
☛ पूर्वी राजेंद्र बिसेन	₹1000	केशव हायर सेकंडरी इंग्लिश स्कूल
☛ अक्षिता विवेक जैन	₹1000	आइडियल पब्लिक स्कूल चंदोरी
☛ फाल्गुनी धनेंद्र बिसेन	₹1000	केशव हायर सेकंडरी इंग्लिश स्कूल
☛ मित धनलाल बिसेन	₹1000	केशव हायर सेकंडरी इंग्लिश स्कूल
☛ हर्षित देवेंद्र ब्रह्मे	₹1000	आइडियल एकेडमी वारासिवनी

❑❑❑

अयोध्या धाम यात्रा के संस्मरण

❑ मैं अभिभूत हूँ, उस क्षण का जिस क्षण मेरी आँखों ने श्रीराम भगवान की सलोनी सूरत का अवलोकन किया शब्दावली गहराई मे जाकर भी उस धन्यवाद के शब्दों को कैसे चुन पाऊ यह मेरे लिये कठिन है। **– ओमप्रकाश गेमनानी, मंडला**

❑ हम सभी इस मंगलमय यात्रा के सहभागी बने यह हमारा परम सौभाग्य था। इस यात्रा के दौरान व्यवस्था में लगे हुए सभी स्वयंसेवकों का सहृदय से धन्यवाद। **– प्रो. विकास जैन, डिंडोरी**

❑ हम सभी को उस त्याग और समर्पण को देखने की यात्रा भी थी जिसके कारण हम सभी को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है। **– अरुण सोनी, कटनी**

❑ प्रभु श्री रामलला जी की कृपा से ऐसा लगा जैसे स्वर्ग में आ गए हैं। **– सुलभ रावत, सागर**

❑ आसानी से प्रभु के दर्शन प्राप्त हुए, हमारी यात्रा बहुत ही आनंदमय ओर सुखद रही। **– सुरेन्द्र राय, दमोह**

❑ मेरे जीवन में अध्यात्म का एक नया अनुभव इस यात्रा से जुड़ा है। **– विकास दुबे, सिहोरा**

❑ अधूरी मानोकामना पूरी हुई मैंने संकल्प किया था की जब भी राम मंदिर बनेगा और मैं जीवित रहूंगा तो अयोध्या राम जन्म भूमि जरूर जाऊंगा और मैं गया मेरे साथ हजारों लाखों श्रद्धालु उपस्थित रहे। **– रामलाल सेन, परासिया**

❑ स्वयंसेवकों, भारतीय रेल मंत्रालय को अयोध्या धाम में आवागमन, आवास, अन्न क्षेत्र व्यवस्था हेतु आत्मीय सत्कार के लिए साधुवाद। लाखों श्रद्धालुओं को (धक्का मुक्की मुक्त) व्यवस्थित दर्शन व्यवस्था के लिए ट्रस्ट कमेटी का आभार।। **– राकेश अग्रवाल, कटनी**

सागर में सम्पन्न हुआ : प्रथम सोशल मीडिया कांक्लेव 'अभ्युदय'

भारत में भारत विरोधी सोशल मीडिया क्रियाकलापों विरुद्ध भारत के पक्ष में सकारात्मक प्रतिक्रिया रखने के लिए सागर में विश्व संवाद केंद्र महाकौशल प्रांत का प्रथम सोशल मीडिया कांक्लेव 2024 'अभ्युदय' संपन्न हुआ। इसमें क्षेत्र प्रांत के अधिकारियों के साथ सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर भी सम्मिलित हुए।

संपूर्ण विश्व आज हमारे मूल्य, विचारधारा और सभ्यता को देख रहा है, इसलिए हमें हमारी सर्वश्रेष्ठ विचारधारा का संरक्षण करना होगा। क्योंकि सोशल मीडिया जैसे व्हाट्सएप, यूट्यूब, एक्स, इंस्टाग्राम इत्यादि का प्लेटफार्म इतना तेजी से बदल रहा है, कि 3 घंटे की फिल्म के स्थान पर 30 सेकंड की रील और अब वही फिल्मी वेब सीरीज के रूप में दिखाई जा रही है। सभ्यता, संस्कृति और जीवन मूल्यों के संघर्षों में सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। हमें इसकी शक्ति को समझना है, क्योंकि बहुत सारे एन जी ओ तथा नक्सली यहाँ वहाँ घूम-घूम कर भारत के विकास, उसकी एकता और संसेंति के विरोध में काम कर रहे हैं। आरक्षण, जाति और धर्म के नाम पर यह लोग हिंदुओं में फूट डाल रहे हैं। यह विरोधी सोच हमारी 100 वर्षों के राष्ट्रीय विचारों की मजबूत आधारशिला को तोड़ने, झूठा आडंबर फैलाने के लिए योजनाबद्ध ढंग से कार्य कर रहे हैं। ऐसे लोगों के पास भारत के अंदर और बाहर भारत विरोधी लोगों का एक बनावटी इकोसिस्टम कार्य कर रहा है, जबकि हमारा इकोसिस्टम भारत भक्ति का प्राकृतिक सिस्टम है। आज सभी स्थानों पर सोशल मीडिया यूजर्स को एक सूत्र में जोड़कर राष्ट्रीय विचारों के संवाहकों को एक सूत्र में जोड़कर अपना एक सिस्टम खड़ा करने की आवश्यकता है। जिससे देश विरोधी लड़ाइयाँ लड़ी जा सके और इस मायावी युद्ध में हम विजय प्राप्त कर सके। आज सोशल मीडिया के माध्यम से गलत तथ्यों को सामान्य व्यक्तियों के बीच परोसकर देश में विभाजन के कार्य किया जा रहे हैं हम सभी भारतीयों को जागरूक रहना है और इन गलत तथ्यों के फैक्ट चेक करते हुए इनको सही प्लेटफॉर्म पर उचित जवाब देना है'-यह विचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मध्य क्षेत्र के क्षेत्र प्रचार प्रमुख कैलाश चंद्र जी के है आपने 'विश्व संवाद केंद्र' महाकौशल प्रांत के द्वारा आयोजित 'सोशल मीडिया कांक्लेव' के उद्घाटन सत्र में दर्शकों के सम्मुख रखें।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के छात्र संघ की पहली हिंदू महिला छात्र अध्यक्ष हमारे देश के बाहरी शक्तियों द्वारा हिन्दू द्वेष के लिए विमर्श फैलाया जाता है, हिन्दू धर्म में ही स्त्रियों को पूजा जाता है, स्त्रियों को लेकर रूढ़ीवात विश्व के अन्य देशों से भारत आया।

कार्यक्रम के पैनल डिस्कशन सत्र में सोशल मीडिया यूजर्स के प्रश्न का उत्तर का मंचासीन प्रखर श्रीवास्तव जो नई दिल्ली से के दूरदर्शन के सलाहकार संपादक और **'हे राम'** नामक पुस्तक के लेखक एवं कर्नाटक उडुपी की सुश्री रश्मि सावंत द्वारा दिया गया। मंच पर सूत्रधार के रुप में प्रशांत बाजपेई, राजेश जायसवाल दीपक द्विवेदी की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

कार्यक्रम की द्वितीय सत्र में प्रखर श्रीवास्तव ने बताया कि महात्मा गांधी की हत्या कांड की भारतीय राजनीति में खूब रोटियां से की गई मैं दावे से कह सकता हूँ कि महात्मा गांधी की चिता 75 वर्ष बीतने के बाद भी पूछी नहीं है राजनीतिक पंडित समय-समय पर इसमें अपने विचार ठोकते रहते हैं महात्मा गांधी की हत्या के लिए कांग्रेस और विपक्ष रस को बदनाम कर रहा है सोशल मीडिया इसे हिंदुत्व की विचारधारा बता रहा है जबकि गांधी की हत्या के कई अलग-अलग कारण थे जैसे मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति, विभाजन पर आमरण अनशन क्यों नहीं, पाकिस्तान को विभाजन में 55 करोड़ देना, अहिंसा का खोखला सिद्धांत आदि।

गलत बात को कोई सौ बार कहे तो वह भी सच ही लगती है। डॉक्टर हेडगेवार ने 1925 में राष्ट्रवाद की धारा का प्रभाव शुरू किया तो देश सही दिशा में बढ़ने लगा। आज सोशल मीडिया के माध्यम से नई पीढ़ी को इस दिशा में शिक्षित करने की आवश्यकता है। हिंदुत्व का विषय राष्ट्र में स्थापित करने की आवश्यकता है। वसुधैव कुटुंबकम की भावना ही हिंदुत्व है। मीडिया में फॉलो कर अध्ययन करते हुए जवाब देकर अपने-अपने स्थान पर हमको वैचारिक कार्य बढ़ाना होगा और सोशल मीडिया में एक्टिव रोल निभाता है। इसके लिए **'समाज में चौन ऑफ ट्रेनिंग की आवश्यकता है'** सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर की कंटेंट और तकनीकी को हमें समझना होगा। इस विषय पर सतत और निरंतर कार्य करते रहना है। हमें स्वयं का कार्य करते हुए समाज में राम के विमर्श को स्थापित करना होगा, तभी भारत पुनः विश्वगुरु बन सकेगा।

उपरोक्त विचार कार्यक्रम के समापन सत्र में महाकौशल प्रांत के प्रांत कार्यवाह उत्तम जी बैनर्जी ने रखें। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सोशल मीडिया की अपनी शक्ति को बढ़ाना है। जो भारत के विरुद्ध नॉरेटिव बनते है हम सभी को उसके फैक्ट चेक करके आगे बढ़ाना है और चल रहे नॉरेटिव को तोड़ने का प्रयास करना है। इससे सामाजिक ताना-बाना बना रहे और इस तरह के नॅरेटिव बनाने वालों के विरुद्ध हमें आवाज उठानी है। अब नॅरेटिव की लड़ाई है। हम सभी को जागरुक होकर एक दूसरे को सोशल मीडिया में फॉलो करके सपोर्ट करना चाहिए। आने वाली पीढियां के लिए भी हमें एक पॉजिटिव नॉरेटिव बनाना चाहिए।

❑❑❑

रानी दुर्गावती और अवंतीबाई को पाठ्यक्रम में स्थान

रानी दुर्गावती और अवंतीबाई की शौर्य गाथाएँ पाठ्यक्रम में सम्मिलित की जाएंगी। इस पर कैबिनेट बैठक में निर्णय लिया गया। वीरांगनाओं के नाम पर प्रति वर्ष विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए समाजसेवा करने वाली महिलाओं को रानी दुर्गावती और रानी अवंतीबाई लोधी सम्मान एवं पुरस्कार दिये जाएंगे।

इन वीरांगनाओं के जीवन पर आधारित वृत्तिचित्र सहित विश्वविद्यालयों में फेलोशिप दी जाएगी। महाविद्यालयों और विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में रानी दुर्गावती, रानी अवंतीबाई जैसी वीरांगनाओं के जीवन के प्रेरणादायी विषय भी समाहित किए जाएंगे।

बिजली कंपनी के मुख्यालय शक्ति भवन में हुई कैबिनेट बैठक में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने ये महत्वपूर्ण निर्णय लिए। यह संपूर्ण जानकारी एक प्रेसवार्ता के माध्यम से नगरीय विकास एवं आवास, संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने दीं।

❑❑❑

मिशन अस्पताल ने नाबालिग से दुराचार को छुपाया

दमोह। हिंडोरिया थाना अंतर्गत एक नाबालिक बच्ची के यौन शोषण का समाचार सामने आया है। जहाँ उसके ही दूर के रिश्तेदार के द्वारा उसका यौन शोषण किया गया। जब बच्ची गर्भवती हो गई तब उसे गर्भपात की दवाइयाँ खिला दी गई। दवा के प्रभाव के कारण लगातार हो रक्तस्राव से परेशान होकर परिजन हिंडोरिया शासकीय अस्पताल ले गए। जहाँ से उसे दमोह अस्पताल भेजा गया। वहीं रास्ते में उसे किसी ने मिशन अस्पताल ले जाने की सलाह दी। घबराए परिजन मिशन अस्पताल लेकर पहुँचे। मिशन अस्पताल ने भी पुलिस को सूचना दिए बिना उसका दो दिन तक उपचार किया। बच्ची की माँ ने बताया कि उसकी सोनोग्राफी की गई और रिपोर्ट के बारे में मिशन अस्पताल के द्वारा बताया गया कि वह तीन माह से गर्भवती है। स्थिति में सुधार न होने पर मिशन अस्पताल ने उसे छुट्टी दे दी। यहाँ उसकी स्थिति बिगड़ती गई और वह बेहोशी की अवस्था में पहुँच गई। ऐसी गंभीर अवस्था में परिजन बच्ची को जिला चिकित्सालय लेकर पहुँचे जहाँ उसके इलाज की व्यवस्था की गई।

इस पूरे घटनाक्रम के संबंध में पुलिस को किसी भी प्रकार से सूचना नहीं दी गई। पुलिस ने केस दर्ज किया। पीड़ित बच्ची के होश में आने के बाद उसके कथन के अनुसार आरोपी नजदीकी रिश्तेदार हैं। हिंडोरिया पुलिस ने दुराचार व पॉस्को जैसी विभिन्न धाराओं के अंतर्गत मामला पंजीबद्ध कर लिया है।

❑❑❑

यूपीए ट्रिब्यूनल के पीठासीन अधिकारी बने जबलपुर के पुरुषेंद्र कौरव

केंद्र सरकार द्वारा मध्य प्रदेश के दिल्ली उच्च न्यायालय में कार्यरत न्यायमूर्ति श्री पुरूषेंद्र कौरव को गैर कानूनी गतिविधि न्यायाधिकरण यानी यूएपीए ट्रिब्यूनल (Unlawful Activities Prevention Tribunal) का स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफइंडिया (SIMI) के प्रकरणों में निर्णय करने हेतु पीठासीन अधिकारी (Presiding Officer) नियुक्त किया गया है।

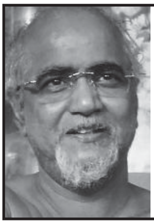

अमृत वचन

कोई काम छोटा नहीं होता, हर काम बड़ा होता है, जैसे कि सोचो जो काम आप कर रहे हो, अगर वह काम आप नहीं करते हो तो दुनिया पर क्या असर होता।

– तरुण सागर जी महाराज

जीतें पुरस्कार बाल मित्रों **मार्च** का अंक पढ़ने के पश्चात निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर अपने उत्तर सीट में भरकर **9522525363** पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम शाश्वत हिन्दू गर्जना में प्रकाशित किये जाएगें तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरूस्कृत भी किया जायेगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल किशोर ही भाग ले सकते है। **उत्तर भेजने की अंतिम तिथि 25 मार्च 2024**

प्र.1 गणतंत्र दिवस के कर्तव्य पथ की परेड पर महिला सशक्तिकरण की कितनी झांकियाँ दिखाई दी।
1. 5 2. 7 3. 9 4. 15

प्र.2 कर्त्तव्य पथ की परेड में महिलाएँ किस फ्लाईपास्ट का हिस्सा बनी?
1. नौसेना 2. वायुसेना 3. सशस्त्र सेना 4. बी एस एफ

प्र.3 जबलपुर की किस पेंटिंग को (एशिया वर्ल्ड ऑफ रिकार्ड) में स्थान मिला।
1. रानी अवन्तीबाई 2. रानी दुर्गावती
3. लता मंगेशकर 4. रामकृपाल नामदेव

प्र.4 आबू धाबी में बना हिंदू मंदिर का उद्घाटन कब हुआ?
1. 14 जनवरी 2. 14 फरवरी 3. 24 फरवरी 4. 24 जनवरी

प्र.5 विद्यासागर जी का देवलोक गमन कब हुआ?
1. 17 फरवरी 2. 22 फरवरी 3. 22 जनवरी 4. 17 जनवरी

प्र.6 कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने कौन-सी योजना बनाई हे?
1. एग्री स्टैक 2. राष्ट्रीय सौर मिशन
3. कृषि में ई-गवर्नेंस 4. लाड़ली लक्ष्मी योजना

प्र.7 भारत में दक्षिण अमेरिका के काले आलू की खेती कहाँ हो रही है?
1. बघेलखण्ड 2. बुन्देलखण्ड 3. महाकौशल 4.इनमें से कोई नहीं

प्र.8 छत्रपति शिवाजी महाराज ज्ञान परीक्षा का आयोजन कहाँ किया गया?
1. सिवनी 2. वारासिवनी 3. सागर 4. जबलपुर

प्र.9 प्रखर श्रीवास्तव द्वारा कौन सी बुक प्रकाशित की गई?
1. हे राम 2. विनाश पर्व
3. ए हिंदू इन ऑक्सफोर्ड 4. इनमें से कोई नहीं

प्र.10 मध्यप्रदेश सरकार ने किन वीरांगनाओं को पाठ्यक्रम में स्थान दिया?
1. रानी दुर्गावती व अवन्तीबाई 2. रानी दुर्गावती व रानीलक्ष्मीबाई
3. रानी दुर्गावती व रानी लक्ष्मीबाई 4. जीजा माता व सावित्री बाई फुले

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें।

(बाल प्रश्नोत्तरी- 11)

(कृपया अपनी पासपोर्ट साईज की फोटो भी व्हाट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( )
4.( ) 5.( ) 6.( )
7.( ) 8.( ) 9.( )
10.( )

नाम.................................
पिता का नाम ....
उम्र .... पूर्ण पता ....
....
पिन .... जिला..................
मोबाईल नं..............................

बाल प्रश्नोत्तरी- 10 के परिणाम

अनन्या गुप्ता

देवांश पटेल

मनोहर अहिरवार

वरूण देव भट्ट

आकाश सिंह

1. अनन्या गुप्ता, सीधी
2. देवांश पटेल, लखनादौन
3. मनोहर अहिरवार, सागर
4. वरूण देव भट्ट, सिंगरौली
5. आकाश सिंह, रीवा
6. केशीका चौरे, छिंदवाड़ा
7. अनुष्का सिंह, छतरपुर
8. गणेश साहू, सिवनी
9. प्रियांजलि तिवारी, सतना
10. पीयूष रजक, मण्डला

प्रथम 5 विजेताओं को पुरुस्कार भेजे जा रहे हैं:-

सही उत्तर:- 1 (2), 2 (4), 3 (1), 4 (4), 5 (3), 6 (4), 7 (4), 8 (3), 9 (3), 10 (1)

सुभाषित

सूर्य संवेदना पुष्पे,
दीप्ति कारुण्यगंधने।
लब्ध्वा शुभं नववर्षेऽस्मिन
कुर्यात्सर्वस्य मंगलम्॥

॥ भावार्थ ॥

जिस तरह सूर्य प्रकाश देता है,
संवेदवा करुणा को जन्म देती है,
पुष्प सदैव महकता रहता है,
उसी तरह आने वाला हमारा
यह नूतन वर्ष आपके लिए हर दिन,
हर पल के लिए मंगलमय हो

देश की प्राण शक्ति है समरसता : विनोद कुमार

देश की या राष्ट्र की प्राण-शक्ति किसमें होती है? इस प्रश्न का उत्तर अनेक लोग अनेक तरह से देते हैं। कोई कहता है कि देश की प्राण-शक्ति, देश की समृद्धि में है, आर्थिक विकास में है। कोई कहता है कि देश की प्राण-शक्ति देश के सैन्य बल में है। कोई कहता है कि, देश की प्राण-शक्ति देश चलाने की क्षमता रखने वाले लोगों में होती है।

ये उत्तर गलत हैं ऐसा नहीं है। हरेक में कुछ न कुछ सत्यांश अवश्य है, किंतु कोई भी उत्तर परिपूर्ण सत्य नहीं है। सत्य उत्तर यह है कि, देश की प्राण-शक्ति 'समरसता' इस एक शब्द में है। समरसता का अर्थ है, देश की प्रजा में एक-दूसरे के प्रति अपनत्व का भाव, हम सब एक देश के अंग हैं। समरसता भावनात्मक संकल्पना है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रत्येक को दूसरे के प्रति अपनत्व की भावना होनी चाहिए, स्नेह होना चाहिए। इसे ही सामाजिक बंधुत्व भी कह सकते हैं। समरसता का अर्थ है सामाजिक बंधुभाव।

यह बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचार प्रमुख श्री विनोद कुमार ने समरसता सेवा संगठन द्वारा संत गाडगे जी एवं संत रविदास जी की जयंती पर आयोजित विचार गोष्ठी एवं सम्मान समारोह के अवसर पर अग्रसेन कल्याण मंडपम विजय नगर में कही। समरसता सेवा संगठन द्वारा अयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ट्रिपल आईटी डीएम के निदेशक श्री भारतेन्दु सिंह, मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचार प्रमुख विनोद कुमार, विशिष्ट अतिथि पं रोहित दुबे, समरसता सेवा संगठन के अध्यक्ष संदीप जैन, सचिव उज्ज्वल पचौरी मंचसीन थे। कार्यक्रम के प्रथम चरण में विचार गोष्ठी एवं दूसरे चरण में सामाजिक जनों का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि भारतेंदु सिंह ने विचार गोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा समरसता वर्तमान की आवश्यकता है, बाल्यकाल में दोनो ही संतो का जीवन गरीबी में गुजरा वे सेवा कार्य करते थे और उनका मानना था समाज में दरिद्र नारायण के रूप में ईश्वर विराजमान है उनकी सेवा करना चाहिए। संत गाडगे जी स्वच्छता के अग्रदूत थे। स्वच्छता का कार्य करते हुए उन्होंने विद्यालय, अस्पताल, छात्रावास इत्यादि का निर्माण कराया।

भारत ने सदैव विश्व वैभव की कामना की है: नीता देवी

जबलपुर/राष्ट्र सेविका समिति ने शाखा संगम कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें महानगर के अलग-अलग नगरों में लगने वाली 24 शाखाओं को एक साथ एक ही महारानी लक्ष्मीबाई स्कूल ग्राउंड में लगाने का प्रयोग हुआ।

महानगर में लगने वाली 24 शाखाओं में से ''शाखा संगम'' में 15 शाखाओं की 202 सेविकाएं शामिल हुईं। सभी शाखाओं की मुख्य शिक्षिका व शाखा कार्यवाहिका अपना ध्वजदंड, ध्वजस्टैंड, ध्वज व

सेविकाओं को लेकर एम.एल.बी. ग्राउंड में एकत्रित हुए। इस कार्यक्रम में असम से आई राष्ट्र सेविका समिति की अखिल भारतीय सह-संपर्क प्रमुख नीता देवी ने कहा कि- भारत ने सदैव विश्व वैभव की कामना की है, हम वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को धारण करने वाले हैं। ''शाखा संगम'' मात्र कार्यक्रम नहीं है अपितु एकता और अखंडता का, संगठन का पर्याय है। नारी शक्ति ने सदा से ही अखंड भारत के परम वैभव को पुनर्स्थापित करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ समर्पित किया है जिसमें छत्रपति शिवाजी की माता जीजाबाई जी का जीवंत उदाहरण हमारे बीच स्थापित है।

इस दौरान वंदेमातरम्, भारत माता की जय, संगठन में शक्ति है, के नारों की गूंज से परिसर गुंजायमान हो उठा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. प्रीति खरे (मध्यप्रदेश वनविभाग जैव विविधता परियोजना में कार्यरत), राष्ट्र सेविका समिति महाकौशल प्रांत की प्रांत कार्यवाहिका सुमेधा पोळ तथा अखिल भारतीय सह-शारीरिक प्रमुख व महाकौशल प्रांत प्रचारिका वसुधा सुमन की उपस्थिति रही।

प्रतिष्ठान में,

प्रकाशक एवं मुद्रक नरेन्द्र जैन द्वारा विश्व संवाद केन्द्र महाकौशल न्यास, प्लॉट नं. 1692, नव आदर्श कॉलोनी के लिए ग्रेनेडियर्स एसोसिएशन प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर द्वारा मुद्रित प्रकाशन स्थान विश्व संवाद केन्द्र, प्लॉट नं. 1692, नव आदर्श कॉलोनी, गढ़ा रोड, जबलपुर मध्य प्रदेश दूरभाष 0761–4006608, संपादक –डॉ. किशन कछवाहा